ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - VIII | Issue - I | English | January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

# १०. मुंबई महानगरीय प्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन

**प्रा. कांबळे डी. एस.**
भूगोल विभाग, जवाहर कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर.

**प्रस्तावना**

मुम्बई महानगर और उसके उपनगरों को मिलाकर बोला जाता है । जिस नगर की आबादी १० लाख हो उसे महानगर कहा जाता है । संसार के महानगरों मे इसका १२ वाँ स्थान है । देश का ४६ प्रतिशत विदेशी व्यापार , १५ प्रतिशत औद्योगिक आय एवं २.५ प्रतिशत औद्योगिक मजदूर यहाँ निवास करते हे । २०११ की जनगणनणा के अनुसार १,८४,१४,२८८ व्यक्ती यहॉ निवास करते है।

मुम्बई की जलवायू मे शुष्क एवं आर्द्र दो मुख्य ऋतुएं है । मुम्बई उपनगर का वार्षिक वर्ष ८६.६ इंच तक पहुंचता है, ओर वार्षिक तपमान ३८° से.से. ११° से तक रहता है । मुम्बई महानगर का कुल क्षेत्रफळ ६०३ किमी $^2$ है ।

महानगर (Metroplis) ग्रीक शब्द है, जिसका तात्पर्य दशलाख से अधिक जनसंख्या वाला नगर होता है । महानगर में अन्तरराष्ट्रीय स्तर के कार्य सम्पादित होते है । जिस कारण इंस (Cosmopolition City ) भी कहते है । आसपास के शहरों एव नगरों पर महानगर का वर्चस्व रहता है । रिहायसी क्षेत्र के बहार उद्योग-धंधो की स्थिति महानगरों के उपान्त क्षेत्र में होती है । महानगर में प्रदेशिक स्तर के कार्यो की प्रधानता होती है । वाणिज्य व्यापार के विकास में क्षत्रीय उत्पादित पदार्थो को छोटे-छोटे शहरों के माध्यम से यहॉ इकट्ठा किया जाता है एवं बाहर से आयात माल को क्षेत्र विशेष में वितरित किया जाता हे । संसार के महानगरोंमे मुम्बई एक भारत के पश्चिमी तट पर स्थित महानगर है , इसलिए मुम्बई को भारत का प्रवेशद्वार कहा जाता हे ।

**उद्देश (Objective)**

जनसंख्या की अभिवृध्दि के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कुकुरमुत्ता की तरह महानगरीय क्षेत्र फैल रहे है। लेकिन, दुर्भाग्य की बात है कि उचित नियोजन के अभाव में सभी जगह जनसंख्या का जमहाट, गंदी बस्तियों का विकास, पेयजल की आपूर्ति में कमी , साफ-सुधरा रखने की उचित व्यवस्था का अभाव इत्यादि मिलते है। अत: मुम्बई महानगर की ओर स्थानीय सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिये। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश है।

**शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध विषयपूर्ण रूप से द्वितीयक, संमको पर आधारित है जिसका संकलन मासिक-पत्रिकाओं संदर्भ ग्रंथ इंटरनेट से किया गया है |

**विषय विश्लेषण**

मुम्बई देश का सबसे बडा महानगर है तथा विश्व में इसका दूसरा स्थान है | यह एक बन्दरगाह नगर है जिसके द्वारा देश का ४६ % विदेशी व्यापार का संचालन किया जाता है । यह देश की औद्योगिक आय १५ % भाग प्रदान करता है । यह देश का सबसे बडा वित्तीय एवं बॅंकिंग केंद्र है | महाराष्ट्र राज्य के प्रत्येक क्षेत्र में मुम्बई नगर की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है | राज्य की कुल जनसंख्या का १६ प्रतिशत भाग यहॉं निवास करता है | इसी प्रकार राज्य की ४१ प्रतिशत नगरीय जनसंख्या को मुम्बई मे आश्रय मिलता है, जहॉं महाराष्ट्र राज्य के ७५ प्रतिशत उद्योग धन्धे केंद्रित है | राज्य के औद्योगिक श्रमिकों का ४० प्रतिशत भाग मुम्बई मे कार्यरत है |

मुम्बई एक सात द्वीपों पर बसा हुआ महानगर है जिस पर प्रथम नगरीय बस्ती की शुरूआत पुर्तगालियों द्वारा हुई | बाद में ये द्वीप अंग्रेजो को दे दिये गये जिन्होंने मुम्बई का विकास एक सागर पत्तन के रूप मे किया | १८ वी एवं १९ वी शताब्दी के दौरान इन सात द्वीपों को आपसे में जोड़ दिया गया था कुछ ही वर्षो बाद यह रेलों ओर सडकों द्वारा बड़ौदा, जबलपूर, नागपूर, रायचूर तथा देश के अन्य महत्वपूर्ण नगरों ओर क्षेत्रों से जुड़ गया | इसका पृष्ठ प्रदेश काफी विस्तृत है जो कपास ओर तिलहनों की कृषि हेतू प्रसिध्द है |

मुम्बई भारत के पश्चिमी तट के सहारे एक मात्र महत्वपूर्ण प्राकृतिक बन्दरगाह है | स्वेज नगर के निर्माण के उपरान्त यह पश्चिमी यूरोप और खाडी के देशों से सुसम्बध्द हो गया है | मुम्बई का द्वीपीय क्षेत्र समुद्र तट और पर्वतीय श्रृंखलाओं के मध्य उत्तर-दक्षिण फैले एक १७ किमी, लम्बे और ५ किमी, चौडे समतल मैदान के रूप में-सालसेटी द्वीप पर हुआ था, जो मुख्य स्थल से थाना और भसीन की संकरी खाडियो द्वारा अलग था | तब से निरन्तर इसके क्षेत्र विस्तार एवं जनसंख्या में वृध्दि हे एवं आज इसका क्षेत्रफळ पुराने नगर से १० गुना अधिक है (६३० वर्ग कि.मी. ) तथा यह मुख्य स्थल से परिवहन मार्गो द्वारा भली भाती जुड़ा हुआ हे | इसके पोताश्रय के पास १९२ वर्ग किमी का सुरक्षित गहरा जल क्षेत्र हे जो इसे देश के बन्दरगाहों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है | बृहन्तर मुम्बई का मेलाव रेल-सडक मार्गों के सहारे फान के आकार में थाना जनपद की तरफ पाया जाता है |

मुंबई की जनसंख्या वृध्दि का मुख्य कारण यहॉ की औद्योगिक एवं वाणिज्यक क्रियायें है, जिनसे आकृष्ट होकर देश के विभिन्न भागों से लोग आकर यहॉ बसते रहते है। यहॉ की ६३ प्रतिशत जनसंख्या का जन्म ब्रहद मुंबई की सीमा से बाहर हुआ है। इसी प्रकार नगर की जनसंख्या में , ५८ % प्रतिशत भाग गेर मराठी (विदेशी ६ प्रतिशत ) लोगों का है। जनसंख्या में स्त्रियों की संख्या बहुत कम है (यौन अनुपात ७७३/१०००) कुल जनसंख्या में कर्मकारों का प्रतिशत ३९ है। जिसमें ९५ प्रतिशत अकृषित कार्यो (४५ % उद्योग में) लगे है।

मुम्बई के औद्योगिक विकास में तेजी से वृध्दि हुई है। यही कारण है कि गत २० वर्षो में थाना - बेलापूर एवं तलोजा क्षेत्रो में कई औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हुई है। थाना क्रीक पर निर्मित नये पुल से नगर के दक्षिणी और दक्षिणी -पूर्वी भाग के बीच अभिगम्यता बढ गयी है तथा बृहतर मुम्बई और नवीन मुम्बई आपस में जुड गये है।

वस्त्र उद्योग नगर का सबसे पुराना एवं प्रभावशाली उद्योग है, जिसके कारखाने परेल के समीप स्थित है , जहॉ पहले भूमि का मुल्य कम था। इंजीनियरिंग दुसरा प्रमुख उद्योग है, जिसका केंन्द्रीकरण माझगांव के निकट पाया जाता है । इसमें मुख्यत: वस्त्र उद्योग और छपाई की मशीनें बनाई जाती है। रसायन, दवायें एवं खाद्य उद्योग भी नगर के विभिन्न भागों में केंद्रित है। नगर से बाहर के भागों मे धातु, ओषधीय , रसायन, डेयरी और चर्म उद्योगो के केंद्र कल्याण तक फैले हुए है। इस औद्योगिक विकास मे जलविद्युत शक्ति का प्रमुख योगदान रहा हे। जलविद्युत शक्तिगृहों (लोनावला, नीलामुळा एवं आन्ध्रावेली ) की स्थापना १९२७ में पश्चिमी घाट पहाडियॉ सहारे की गयी थी। बाद में खोपोली, भिवपुरी एवं भीरा में नये केंद्र बनाये गये। कोयना प्रयोजन से मुम्बई की विद्युत की आवश्यकताओं को पूरा करने में काफी मदद मिली है।

मुम्बई आज भी पश्चिमी तट के सहारे दश का सबसे बडा बन्दरगाह है जिसका पृष्ठ प्रदेश दिल्ली , जबलपूर, नागपूर एवं हैदराबाद तक विस्तृत है। द्वीप के आठ किलोमीटर चोडे क्षेत्र में अनेक गोदियॉं स्थित है जिनमे प्रिंस, विक्टोरिया एवं अलेक्जेन्ड्रिया प्रमुख है। ये आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हे , जिनमें तेल के टैंकरो, कपास, कपास के सामानों तिलहन, खाद्यान्न, मेगनीज, मशीन एवं विनिमार्ण संबंधी सामानों को आसानी से उतारा-चढाया जा सकता है। इस बन्दरगाह में नौसेना की जहाजों को भी गोदी की सुविधायें प्राप्त है।

मुम्बई महानगर अनेक समस्याओं से प्रभावित हे जिनमें जनसंख्या का बढता दबाव, आवासों की कमी, परिवहन एवं यातायात सुविधाओं की कमी, उपयोगी सेवाओं का अभाव , बढता प्रदूषण, औद्योगिक अशान्ति, समाजिक बुराइयॉं, विद्युत , भूमि, जल का गहराता संकट आदि प्रमुख हे। नगर में लगभग ५५ लाख लोग गन्दी बस्तियों मे निवास करते हे २०११ इसी प्रकार महानगर में लगभग २ लाख लोग फुट पाथें पर खुले आसमान के नीचे अपना जीवन व्यतीत कर रहे है।

निष्कर्ष

मुम्बई महाराष्ट्र प्रान्त के पश्चिम अरब सागर के तट पर स्थित भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक एवं औद्योगिक केंद्र के साथ-साथ पत्तन नगर एवं सामरिक महत्व का केंद्र माना जाता है । यह एक नियोजित नगर है जहाँ थाने, मुम्बई शहर , मुम्बई उपनगर, नवी मुम्बई , विरार , वसई, भिवडी, मीरा भायंदर, कल्याण, डोंबिवली, उल्हासनगर इत्यादि उपनगरीय क्षेत्र है ।

संदर्भ ग्रंथ

१) अधिवास भूगोल - वर्मा, लक्ष्मी नारायण, जयपूर

२) अधिवास भूगोल -आर.सी. तिवारी, इलाहाबाद

३) वस्ती भूगोल -डॉ.सुरेश फुले विद्याभारती औरंगाबाद

४) भूगोल नेट / सेट - सिसो दिया - उपकार प्रकाशन आजरा

५) नगरीय भूगोल की रूपररेखा- राम बहादूर मंडळ, कन्सेटर परिलडेर्शींग कंपनी, नई दिल्ली

६) नागरी भूगोल - डॉ.आर.एस.अडसूळ- सप्रेम प्रकाशन, कोल्हापूर

७) वस्ती भूगोल- डॉ.विठ्ठल घारपूरे पिंपळापूरे ॲण्ड कं. पब्लिशर्स नागपूर